अध्याय– 4 देव (जन्मः– संवत् 1730वि0– निधनः 1824वि0) कक्षा 10 (हिन्दी)

**जीवन परिचय–** जन्म – इटावा ;उ.प्र. में सन् 1673 में

मृत्यु सन् 1767

रीतिकालीन काव्य परम्परा में विशिष्ट स्थान रखने वाले कवि देव का जन्म विक्रम संवत 1730 वि0 में हुआ। इनके ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि ये इटावा के रहने वाले थे। इस सम्बन्ध में एक उक्ति प्रचलित है–

**"द्यौस–रिया कवि देव को नगर इटावो वास"।**

इनके पिता का नाम कुछ विद्वान बिहारीलाल दुबे मानते हैं। इनके वंशज वर्तमान में इटावा और कसमरा में रहते है।

देव की रचनाओं की संख्या 52 कही जाती है किन्तु इनकी प्रमुख और प्राप्त रचनाओं में भावविलास, भवानीविलास, कुशलविलास, रसविलास, काव्य रसायन, देव चरित्र ,अष्टयाम, सुजानविनोद, प्रेमतरंग आदि है।

देव ने भी केशव की भाँति कवि और आचार्य कर्म का निर्वाह किया था। स्वभाव से रसिक होने के कारण उनके काव्य में श्रृंगार का उच्छल प्रवाह बहता है। यह श्रृंगारिकता छिछली नहीं अपितु उसमें विशेष गंभीरता विद्यमान है। वे वैसे तो रसवादी आचार्य थे परन्तु अलंकारों के स्वाभाविक प्रयोग के प्रति उनका आग्रह था। देव ने साहित्यिक ब्रजभाषा को अपनाया था परन्तु उसमें संस्कृत, अपभ्रंश, फारसी तथा उत्तर भारत की अन्य बोलियों के शब्दों का स्वतंत्रता से प्रयोग मिलता है।

इस प्रकार कवि देव काव्य सृष्टि और आचार्य दृष्टि के कारण ऐसे महाकवि है, जिन्होंने तत्कालीन सामाजिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों में हिन्दी साहित्य को अमूल्य ग्रन्थ रत्न प्रदान किए।

MAHESH KUMAR BAIRWA (LECTURER)

**पाठ परिचय–**

यहाँ निर्धारित कविता में देव ने अपने आराध्य श्रीकृष्ण का गुणकथन किया है। साँवरिया श्रीकृष्ण के पाँवों से घुँघरू के मधुर स्वर झंकृत हो रहे है। वे पीत वसन में सुहावने लग रहे है।माथे पर मोर मुकुट है। नयन चंचल है। मंद हँसी चेहरे पर शोभायमान है। कृष्ण के लोक प्रचलित स्वरूप को कवि ने अभिधा में समग्रता से उपस्थित कर दिया है। देव को पेचीले मजमून की बुनावट में निपुणता हासिल थी। दूसरे पद्य में उन्होंने मौलिकतापूर्वक कृष्ण के जादुई सूरत में गोपिकाओं के विवश समपर्ण का वर्णन किया है। तीसरा पद्य स्मृति एवं स्वप्न कविता का संगम है। नायिका का स्वप्निल संसार उसके जागते ही खो जाता है। स्वप्न में सुखद मिलन है और जागरण में जुदाई। यह विडम्बना ही कविता की मौलिकता एवं खूबसूरती है।

**पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि ,कटि किंकिनि. में धुनि की मधुराई**
**साँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई।।**
**माथे किरीट बड़े दृग चंचल, मंद हँसी मुख चंद जुन्हाई।**
**जै जग–मंदिर–दीपक सुंदर, श्रीब्रजदूलह 'देव' सहाई।।**

कठिन शब्दार्थ –पाँयनि– पैरों में । नूपुर – पायल , पायजेब ,घुघंरू। मंजू – सुन्दर। कटि–कमर। किंकिनि– करधनी, कमर में पहने जाने वाला आभूषण। धुनि–ध्वनि। मधुराई– मधुरता। सांवरे–श्याम वर्ण , सांवला। अंग –शरीर। लसै–शोभित है। पट–वस्त्र पीत– पीला। हिये–हृदय पर । हुलसै– आनन्दित है। शोभित है। बनमाल – वन के फूलों की माला। सुहाई–शोभा देना ,सुहावनी लगना। किरीट –मुकुट । दृग– नेत्र। चंचल – स्थिर न रहने वाले। मंद –हल्की। मुखचंद–मुख रूपी चन्द्रमा। जुन्हाई – चांदनी , आभा। जैं– जय । जग–मंदिर–दीपक– जगत रूपी भवन के दीपक के सामने। श्रीब्रजदूलह– ब्रज भूमि के दूल्हे के समान। ब्रज की शोभा। सहाई– सहायक, कृपालु।

भावार्थ – कवि देव श्रीकृष्ण की राजसी साज सज्जा युक्त छवि का शब्द चित्र अंकित करते हुऐ कह रहे है । श्रीकृष्ण के चरणो में सुन्दर नूपुर बज रहे है। और कमर में पहनी करधनी मधूर ध्वनि कर रही है। जिनके श्याम वर्ण शरीर पर पिताम्बर सोभित है। और वक्ष पर बन फुलों की माला शोभा पा रही है। जिनके मस्तक पर मुकुट बिराज रहा है। और नेत्र बडे चंचल है। जिनकी मंद मंद मुस्कान मुख रूपी चन्द्रमा की चांदनी जैसी प्रतीत हो रही है। ऐसे कृष्ण जग रूपी मंदिर को

MAHESH KUMAR BAIRWA (LECTURER)

अपने दिव्य सौन्दर्य से प्रकाशित करने वाले सुन्दर दीपक के समान है। उनकी सदा जय हो। ब्रज के दूल्हे के समान सजी धजी छवि वाले कृष्ण सदा सबके सहायक हो। सब पर कृपा रखें । यही कवि की कामना है।

**धार में धाय धँसी निरधार ह्वै, जाय फँसी, उकसीं न अबेरी।**

**री अंगराय गिरीं गहरी, गहि, फेरे फिरीं औ घिरी नहीं घेरी।।**

**देव कछू अपनो बस ना, रस –लालच लाच चितै भयीं चेरी।**

बेगि ही बूडि गयी पखियाँ, अखियाँ मधु की मखियाँ भयीं मेरी।।

***कठिन शब्दार्थ –*** धार–धारा, श्रीकृष्ण के प्रेम की धारा।धाय–दौडकर,शीघ्रता से। धँसी– प्रवेश कर गई।निरधार–बिना किसी आधार या सहारें के। उकसीं– निकली।अबेरी–निकाले जाने पर। अंगराय– अंगडाई लेकर, मस्ती से।गहि–पकडने पर। फेरे–लौटाने पर। फिरीं–लौंटी। घिरी–पक डमें आई। घेरी– घेरे जाने पर। रस–लालच– प्रेमरूपी रस के लालच में आकर। लाल–श्रीकृष्ण। चितै–देखकर। चेरी–दासी,वंशीभूत। बेगि– शीघ्र। बूडि गयी– डूब गई। पखियाँ– पंख। अखियाँ– आंखे। मधु–शहद। मखियाँ–मक्खियाँ।भयी –होगई।

व्याख्या– इस छन्द में कवि ने श्रीकृष्ण के प्रेमरस में डूबी गोपी का एक मधुमक्खी के रूप में वर्णन किया है। जो शहद में डूबने पर फिर निकल नहीं पाती।

श्रीकृष्ण के प्रेम रस में पगी अपनी आँखों की दशा का वर्णन करते हुए कोई गोपी या नायिका कह रही है कि उसकी आँखे बिना सोचे समझे प्रिय कृष्ण के प्रेम रस की धारा में शिघ्रता से प्रवेश कर गई और प्रिय श्रीकृष्ण के प्रेम प्रवाह में प्रवाहित होने लगी। उस रस धारा में वे ऐसी फँस गई कि निकालने का यत्न करने पर भी नहीं निकल पाई। अरी सखि! निकलना तो दूर वे तो अँगडाई लेकर उस रस धारा में और गहरी जा गिरी, आनन्द विभोर होकर प्रेम मं और अधिक मग्न हो गई। मैनें इन आँखों को पकडकर लौटाना चाहा परन्तु वे नहीं लौटी। इन्हें घेरकर रोकना चाहा पर ये नहीं रूकी। अब इन आँखों पर मेरा कोई वश नहीं रह गया है।ये तो प्रिय श्रीकृष्ण के रूप रंग के रस को चखने के लालच में, उन्हें देखते ही उनकी दासी जैसी हो गई है।जैसे शहद में पंखों के डूब जाने पर मधुमक्खी

MAHESH KUMAR BAIRWA (LECTURER)

निकलने में असमर्थ हो जाती है। उसी प्रकार मेरी आंखे भी श्रीकृष्ण के मनमोहक स्वरूप के मधु में फंसकर लौटने में असमर्थ हो गई है। भाव यह है कि अब गोपी का कृष्ण के प्रेम पाश से मुक्त हो पाना सम्भव नहीं रहा।

झहरि झहरि झींनी बूँद है परति मानो,

घहरि घहरि घटा घेरी है गगन में।

आनि कह्यो स्याम मो सो, चलौ झूलिबे का आजु

फूली ना समानी, भई ऐसी हौं मगन मैं।।

चहति उठयोई, उडि गई सो निगोडी नींद,

सोय गए भाग मेरे जागि वा जगन में।

आँखि खोलि देखौं तो, घन हैं या घनस्याम,

वेई छायी बूँदें मेरे , आँसू ह्वै दृगन में।।

**कठिन शब्दार्थ :–** झहरि झहरि– झकोरों के साथं। झीनी–नन्हीं, पारदर्शी। घहरि–घहरि– गहरा गहराकर, घुमड घुमडकर। घेरी है– घिरी हुई है। आनि–आकर। फूली ना समानी– अत्यन्त प्रसन्न हुई। हौं –मैं। मगन–भाव, विभोर, आनंदमग्न। उठयोई–उठना। उडि गई– खुल गई। निगोडी– गोड(अंग) रहित, विकलांग(ब्रज प्रदेश की एक गाली)। सोय गए भाग– अभागी होना। जगन–जागना,जागरण। घन–बादल। घनस्याम–श्रीकृष्ण। वे–वे ही। दृगन में– आँखों में।

व्याख्याः– इस छंद में एक गोपी अपनी सखी को कृष्ण मिलन के सपने के बारे में बता रही है जो सपना ही बनकर रह गया।

कोई गोपी अपनी अंतरंग सखी को अपने सपने के बारे में बताती हुई कहती है– सखी! रात को मैंने देखा की वर्षा ऋतु है।झकोरों के साथ नन्हीं–नन्हीं बूंदें बरस रहीं है और आकाश में घुमड घुमडकर काली घटाएँ घिर रही है।ऐसे सुहावने दृश्य के बीच मेरे परम प्रिय श्रीकृष्ण ने आकर मुझसे कहा– चलो आज झूलने चलते

MAHESH KUMAR BAIRWA (LECTURER)

है। यह सुनकर मैं फूली नहीं समाई। कृष्ण का यह प्रस्ताव सुनकर मैं भाव विभोर हो गई। मैं उनके साथ चलने को उठ ही रही थी कि मेरी अभागी नींद ही खुल गई। उस जाग जाने ने तो जैसे मेरे भाग्य को ही सुला दिया। मैं अभागी बन गई। आंखे खोलकर जैसे ही मैंने देखा, तो वहाँ न कहीं बादल थे, न प्रिय श्रीकृष्ण। सपने में झरती बूँदें ही अब मेरे नेत्रों से आँसू बनकर झर रही थीं। मैं अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहा रही थी।

पुनरूक्तिप्रकाश अलंकार व विरोधाभास अलंकार है।

सवैया – सवैया एक छन्द है । यह चार चरणों का समपाद वर्नछन्द है। वर्णिक वृत्तों में 22 से 26 अक्षर के चरण वाले जाति छन्दों को सामूहिक रूप से हिन्दी में सवैया कहने की परम्परा है। इस प्रकार सामान्य जाति –वृत्तों से बडे और वर्णिक दण्डकों से छोटे छन्द को सवैया समझा जा सकता है। रसखान के सवैया बडे प्रसिद्व है।

जैसे – मानुस हो तो वही रसखान, बसौं ब्रज गोकुल गांव के ग्वाइन।
जो पसु हौं तो कहा बस मेरो ,चरौ नित नंद की धेनु मँझारत।।

**कवित्त** μ कवित्त वार्णिक छंद है, उसके प्रत्येक चरण में 31–31 वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण के सोलहवें या फिर पंद्रहवें वर्ण पर यति रहती है। सामान्यतः चरण का अंतिम वर्ण गुरू होता है।

सीस मुकूट कटि काछनि, कर मुरली उर माल।
यों बानक मौं मन सदा, बसौ बिहारी लाल।।

***μ बिहारी***

MAHESH KUMAR BAIRWA (LECTURER)